(ब) नदी के द्वीप

सामान्य परिचय

'नदी के द्वीप' अज्ञेय की एक बहुचर्चित कविता है जिसमें अज्ञेय जी ने प्रतीकात्मक शैली में यह प्रतिपादित किया है कि व्यक्ति की स्थिति समाज में एक द्वीप की भांति है। व्यष्टि चेतना को सुरक्षित रखते हुए भी वह उस समष्टि का अंग है। नदी समष्टि चेतना का प्रतीक है जबकि 'द्वीप' व्यष्टि चेतना का। इस द्वीप का जन्म नदी में से ही हुआ है किन्तु वह नदी की धारा से अलग है। धारा बनने का अर्थ है समष्टि के लिए अपनी सत्ता को समाप्त कर देना किन्तु द्वीप बनने का अर्थ है व्यष्टि चेतना को सुरक्षित रखते हुए समष्टि का अंग बनना।

नदी मां है, द्वीप का जन्म उसी से हुआ है। कवि का मंतव्य है कि समष्टि की सरिता में व्यक्ति (व्यष्टि) की स्थिति एक द्वीप के समान है, धारा के समान नहीं। धारा तो समाज के प्रति पूर्ण समर्पण है, नदी से अलग उसका कोई अस्तित्व नहीं, किन्तु द्वीप नदी में होते हुए भी अपना अलग अस्तित्व रखता है। कवि को यह स्वीकार नहीं है कि वह समष्टि का अंग बनकर अपनी व्यष्टि चेतना को समाप्त कर दे। रेत बनकर वह जाना उचित नहीं है। द्वीप की तरह नदी के प्रवाह को झेलते रहकर अपने अस्तित्व को बनाये रखने में ही जीवन की सार्थकता है। भले ही नदी विकराल होकर द्वीप को अपने में समेट ले किन्तु यह निश्चित है कि बाढ़ का प्रकोप कम हो जाने पर वह द्वीप फिर से अस्तित्व में आ जायेगा। द्वीप रेत बनकर ही धारा का अंग नहीं बन सकता अपितु अपने अस्तित्व को मिटाकर वह जल को गंदा ही करता है इसलिए उसकी अलग सत्ता रहने से ही नदी निर्मल रह सकेगी।

(1)

हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर

स्रोतस्विनी बह जाए।
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण, गलियां, अन्तरीप, उभार सैकत कूल,
सब गोलाइयां उसकी गढ़ी हैं।
मां है वह, है, इसी से हम बने हैं।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियां प्रयोगवाद के प्रवर्तक सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित कविता नदी के द्वीप' से उद्धृत की गई हैं।

प्रसंग—नदी में जो स्थिति द्वीप की है वही समाज में व्यक्ति की है। नदी का द्वीप नदी से निर्मित है, वह उसकी जननी है, किन्तु नदी में रहते हुए भी वह नदी से अलग अपना अस्तित्व रखता है। प्रतीकों का प्रयोग करते हुए कवि ने प्रतीकात्मक शैली में यह बताने का प्रयास किया है व्यक्ति भले ही समाज का अंग हो, पर उसका अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है। स्वतन्त्र इयत्ता है।

व्याख्या—द्वीप अपने बारे में विचार करते हुए कहता है कि हम इस नदी के द्वीप हैं, हमारा जन्म इस नदी से हुआ है, उसी ने हमें रूप, आकार, पहचान सब कुछ प्रदान किया है। हम इस नदी में ही रहते हैं अतः यह कभी नहीं कहते कि नदी हमें अकेला छोड़कर बहती हुई चली जाए। यदि नदी ने हमें छोड़ दिया तो हमारी पहचान मिट जाएगी, हमारा अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। जब तक नदी है तभी तक हमारा भी अस्तित्व है, यह बात हम अच्छी तरह जानते हैं।

यह नदी हमारी जननी है, हमारी धात्री है, इसी ने हमें रूप और आकार प्रदान किया है। जल में बहने वाले कंकण, मिट्टी, बालू, पत्थर ने एकत्र होकर इस द्वीप को बनाया है। द्वीप के कोण, गलियां, अन्तरीप, उभार, बालू, किनारा, सारी गोलाइयां इस नदी की जलधारा ने ही निर्मित की हैं।

भाव यह है कि नदी समष्टि चेतना (समाज) का प्रतीक है और द्वीप व्यष्टि चेतना (व्यक्ति) का प्रतीक है। समाज में व्यक्ति का अपना व्यक्तित्व एवं अस्तित्व है पर उसे समाज से अलग करके नहीं देखा जा सकता। व्यक्ति का निर्माण समाज से ही होता है। ठीक उसी प्रकार जैसे द्वीप का निर्माण नदी में ही होता है। व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व की रक्षा करते हुए समाज के प्रति अपना समर्पण करना चाहिए।

विशेष—(1) कवि ने प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग इन पंक्तियों में किया है।

(2) नदी समाज का प्रतीक है तथा द्वीप व्यक्ति का प्रतीक है।

(3) समाज में हमारा अस्तित्व नदी में छोटे-छोटे द्वीपों की तरह है।

(4) नदी और द्वीप के बीच माता-पुत्र का सम्बन्ध जोड़कर कवि ने इस भावना से जोड़ दिया है।

(5) सरल सहज भाषा का प्रयोग है।

(6) यह अज्ञेय की प्रयोगवादी कविता है।

(2)

किन्तु हम हैं द्वीप।
हम धारा नहीं हैं।
स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के।
किन्तु हम बहते नहीं हैं। क्योंकि बहना रेत होना है।
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।
पैर उखड़ेंगे। प्लवन होगा। ढहेंगे। सहेंगे। बह जायेंगे।
और फिर हम चूर्ण होकर भी कभी क्या धार बन सकते?
रेत बन कर हम सलिल को तनिक गंदला ही करेंगे।
अनुपयोगी ही बनाएंगे।

प्रसंग—कवि ने मानव के व्यक्तित्व को नदी का द्वीप माना है जबकि नदी समष्टि चेतना का प्रतीक है। द्वीप का अस्तित्व धारा से अलग है। नदी का द्वीप नदी में रहते हुए भी अपना अस्तित्व बनाये रखता है। वह रेत बनकर नदी को गंदा नहीं करना चाहता। प्रतीकात्मक शैली में कवि ने व्यक्ति को महत्व प्रदान करते हुए समष्टि चेतना के लिए उसे आवश्यक माना है। व्यक्ति का अपना महत्व समाज में है और उसे समाज के हित के लिए अपना अलग अस्तित्व बनाये रखना चाहिए।

व्याख्या—हम इस नदी के द्वीप हैं तथा हमारा अस्तित्व धारा से अलग है। नदी का द्वीप नदी में से उत्पन्न होता है तथा नदी में रहते हुए भी अपनी अलग सत्ता बनाये रहता है। दूसरी ओर वह बहती हुई धारा है जिसने अपनी सत्ता को पूर्णतः समाप्त कर दिया है और जो नदी का ही एक अंग बन गई है। धारा का अस्तित्व नदी से है। नदी से अलग धारा की कोई कल्पना नहीं की जा सकती, क्योंकि धारा ने स्वयं को नदी के प्रति पूर्णतः समर्पित कर दिया है किन्तु द्वीप ने अपनी व्यक्ति चेतना को बनाये रखकर नदी के प्रति समर्पण किया है।

भाव यह है कि व्यक्ति समाज की इकाई है। समाज में रहते हुए भी उसकी निजता (व्यक्तिगत सत्ता) सुरक्षित रहती है। आज का व्यक्ति अपनी सत्ता को खोना नहीं चाहता। यह ठीक है कि वह द्वीप नदी का अंग है, नदी के प्रति समर्पित है किन्तु प्रवाह में पड़कर अपने अस्तित्व को वह खोना नहीं चाहता। यदि वह प्रवाह में पड़ेगा, बहने लगेगा तो रेत बन जायेगा और उसका अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। उसके पैर उखड़ जायेंगे, स्थिरता नष्ट हो जायेगी और उस भयंकर बाढ़ में पड़कर वह कहीं का न रहेगा। लेकिन इतना निश्चित है कि अपने को पूरी तरह मिटाकर भी द्वीप धारा का अंग नहीं बन सकता। वह रेत बन जायेगा तथा रेत बनकर निर्मल जल को गंदला ही करेगा, उसे अनुपयोगी बनायेगा। इसलिए वह अपनी व्यष्टि चेतना को बनाये रखना चाहता है। भाव यह है कि उसके व्यक्तित्व की सार्थकता द्वीप बने रहने में है, नदी में पूर्णतः विलीन होने में नहीं है।

विशेष—1. कवि ने यहां प्रतीकों के माध्यम से अपना कथ्य स्पष्ट किया है।

2. नदी समष्टि चेतना का प्रतीक है जबकि द्वीप व्यष्टि चेतना का।

3. व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व की रक्षा करते हुए समाज के प्रति अपना समर्पण करना चाहिए।

4. द्वीप का अस्तित्व है, किन्तु धारा तो पूर्णतः नदी का ही एक अंग बनकर अपने अलग व्यक्तित्व को समाप्त कर चुकी है।

5. कवि द्वीप बना रहना चाहता है धारा नहीं बनना चाहता। इसका तात्पर्य है कि वह अपनी व्यष्टि चेतना को सुरक्षित रखना चाहता है।

6. नदी की उपयोगिता द्वीप के लिए है क्योंकि वही द्वीप को जन्म देती है, वही उसका निर्माण एवं पालन-पोषण करती है। समाज ही व्यक्ति को जन्म देता है, उसे संस्कारित करता है।

7. नदी की बाढ़ में द्वीप बहता नहीं स्थिर होकर खड़ा रहता है। यदि उसमें यह स्थिरता नहीं होगी तो वह रेत होकर बह जायेगा।

8. नयी कविता में भावना गौण है, बुद्धि की प्रधानता है।

9. प्रतीकात्मक शैली, लाक्षणिक भाषा, मुक्त छंद का प्रयोग है।

(10)

द्वीप हैं हम
यह नहीं है शाप
यह अपनी नियति है।
हम नदी के पुत्र हैं
बैठे नदी के क्रोड में
वह वृहद भूखण्ड से हम को मिलाती है
और वह भूखण्ड अपना पितर है।

प्रसंग—समाज में व्यक्ति की स्थिति को कवि ने नदी में द्वीप के प्रतीक से अभिव्यक्त किया है। द्वीप होना अभिशाप नहीं है अपितु यह हमारी नियति है। समाज के अंग के रूप में ही व्यक्ति का महत्व है। समाज से अलग होकर उसकी कोई पहचान नहीं रहती।

व्याख्या—द्वीप कहता है कि यदि हम नदी के द्वीप हैं तो यह अभिशाप नहीं है अपितु हमारी नियति है। नदी से अलग हमारा कोई अस्तित्व नहीं है। यह नदी हमारी जननी है और हम इसके पुत्र हैं। इसने हमें अपनी कोख से जन्म दिया है तथा हम इसकी गोद में उसी तरह बैठे हैं जैसे जननी की गोद में शिशु। जिस तरह माता अपने बच्चों को जन्म देकर पिता से मिलाती है उसी तरह इस माता नदी ने हमें रूप-आकार देकर

उस भूखण्ड से हमें मिलाया है जो हमारा पिता है। द्वीप भी भूखण्ड है और यह छोटा सा भूखण्ड उस विशाल भूखण्ड का ही प्रतिरूप है जिसे हम अपना पिता कह सकते हैं।

विशेष—(1) प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग है।

(2) अज्ञेय की मान्यता है कि जिस प्रकार द्वीप का अस्तित्व नदी से है उसी प्रकार व्यक्ति का अस्तित्व समाज से है।

(3) कवि अपनी व्यष्टि चेतना को तथा अपने अस्तित्व को अलग बनाए रखने का आकांक्षी है।

(4) प्रयोगवादी काव्य धारा के प्रमुख कवि अज्ञेय अस्तित्ववाद से प्रभावित हैं।

(5) नयी कविता बुद्धि प्रधान है। वह चिन्तन करती है उसमें भावना गौण है।

(6) सरल सहज खड़ी बोली का प्रयोग।

(4)

नदी तुम बहती चलो।
भूखण्ड से जो दाय हमको मिला है, मिलता रहा है।
मांजती संस्कार देती चलो,
यदि ऐसा कभी हो
तुम्हारे आह्लाद से या दूसरों के किसी स्वैराचार से—
अतिचार से
तुम बढ़ो प्लावन तुम्हारा घरघराता उठे
यह स्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्तिनाशा
और काल प्रवाहिनी बन जाय।
तो हमें स्वीकार है वह भी, उसी में रेत होकर
फिर छनेंगे हम। जमेंगे हम। कहीं फिर पैर टेकेंगे।
कहीं फिर खड़ा होगा नए व्यक्तित्व का आकार।
माता ! उसे फिर संस्कार देना तुम।

प्रसंग—इस द्वीप का निर्माण नदी ने किया है। उसे आकार देने वाली, उसे जन्म देने वाली माता नदी ही है, किन्तु यह द्वीप नदी में स्थित रहते हुए भी नदी से अलग है। नदी की धारा तो पानी से निर्मित है किन्तु नदी का द्वीप स्थल अर्थात् भूखण्ड है। नदी में रहते हुए भी वह नदी से अलग है, विलक्षण है। नदी के प्रवाह में वह अपने अस्तित्व की रक्षा कर रहा है। भले ही नदी में बाढ़ आ जाय किन्तु यह द्वीप अन्ततः फिर उसी में उभर आता है। उसे पुनः नवीन संस्कार नदी रूपी माता से प्राप्त हो जायेंगे।

व्याख्या—हे नदी! तुम माँ हो। इस द्वीप को तुमने ही जन्म दिया है। तुम निरन्तर बहती रहो, तुम्हारी गति कभी अवरुद्ध न हो। यह द्वीप नदी में रहते हुए भी नदी से अलग है क्योंकि वह भूमि का एक खण्ड है, पानी की धारा नहीं है। यदि नदी उसकी माता है, तो भूखण्ड उसका पिता है। पृथ्वी से जो अंश उसे भूखण्ड के रूप में मिला है, उसकी रक्षा करना उसका कर्तव्य है इसीलिए वह अपनी व्यष्टि चेतना को सुरक्षित बनाये हुए है।

नदी उसकी माता है, जो उसे रूपाकार देती है, उसका संस्कार करती है। द्वीप कहता है कि यदि नदी में किसी कारण से बाढ़ आ जाय, जो किसी स्वेच्छाचार, अतिवाद का ही परिणाम हो सकती है तथा यह निर्मल जलधारा वाली नदी कर्मनाशा या कीर्तिनाशा की भांति प्रबल होकर विकराल एवं विनाशकारी बाढ़ से युक्त हो जाय तो हमें वह स्थिति भी स्वीकार करनी होगी। उस बाढ़ में हम भले ही रेत हो जायें किन्तु हमें पूरा विश्वास है कि हम फिर से अपने पैर टेक लेंगे और बाढ़ का प्रकोप कम होते ही फिर जम जायेंगे, अपने पैर टिका लेंगे और एक नये आकार का द्वीप फिर बन जायेगा। हे नदी माता तुम उसे पुनः संस्कारित कर देना, यही प्रार्थना है।

विशेष—1. प्रतीकात्मक शैली, नदी समष्टि का प्रतीक है, द्वीप व्यष्टिचेतना का प्रतीक है।

2. व्यष्टि चेतना को बनाये रखने का समर्थन कवि ने किया है।

3. नदी को माता तथा भूखण्ड को पिता कहा गया है।

4. मानव व्यक्तित्व को परिभाषित करने का प्रयास है।

5. मुक्त छंद, खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग।